

वानिकी अनुसंधान तथा मानव संसाधन विकास केन्द्र छिन्दवाड़ा

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र छिन्दवाड़ा की स्थापना 30 मार्च 1995 को की गई। 3 जनवरी 1996 को इसे उष्णकटिबंधी वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का अनुबंगी केन्द्र घोषित किया गया। केन्द्र का अधिमत जैव विविधता संरक्षण, अकाष्टीय वन उत्पाद, वन रक्षण, सामाजिक अर्थशास्त्र, संवर्धन तथा वृक्ष सुधार जैसे विशेष क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान करना है। इसके अलावा केन्द्र को स्वरोजगार द्वारा गरीबी उन्मूलन के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर वानिकी क्षेत्र में मानव संसाधन विकसित करने का काम भी दिया गया है।

वर्ष 2006-2007 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनायें

परियोजना 1 : टेरोकार्पस मार्सूपियम, एक संकटापन्न वृक्ष के विभिन्न रोपण स्टॉक का विकास तथा पौधशाला तकनीक का मानकीकरण [109/सी एफ आर एच आर डी/2006-2 (9) 2006-2009]

स्थिति : टेरोकार्पस मार्सूपियम के बीजों को छत्तीसगढ़ क्षेत्र के स्वस्थ वृक्षों से एकत्र किया गया और विभिन्न उपचारों के अंकुरण और पौधवृद्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया। 24 घंटों तक ठण्डे पानी में रखकर उपचारित किये गये बीजों ने गरम पानी तथा सल्फ्यूरिक अम्ल से विभिन्न अवधि तक उपचारित बीजों की तुलना में अच्छे परिणाम दिये हैं। बीज के आकार का अंकुरण तथा आगे होनी वाली वृद्धि पर हमेशा प्रभाव पड़ता है। छोटे बीजों की तुलना में बड़े आकार के बीजों में अंकुरण क्षमता अधिक होती है। क्यारियों में बीज बाने की अवधि के संबंध में जुलाई में उच्चतम और जनवरी में न्यूनतम प्रतिशत पाया गया।

परियोजना 2 : हड़जोर, साईसस क्वान्द्रागुलेरिस लिन्न के सक्रिय रासायनिक घटकों में मौसमीय विविधता पर अध्ययन [108/सी एफ आर एच आर डी/2006-1 (8) 2006-2009]

स्थिति : छिंदवाड़ा, भोपाल और टी एफ आर आई, जबलपुर (मध्य प्रदेश) से साईसस क्वान्द्रागुलेरिस के पादप नमूने एकत्र किये गये। साथ ही नागार्जुन, वानस्पतिक उद्यान, अकोला, वलगांव, अमरावती जिला (महाराष्ट्र) डाबरा और रामगढ़ (छत्तीसगढ़) से भी नमूने एकत्र किये गये और केन्द्र की पौधशाला में उन्हें औषधीय तथा सुरभित पादपों के साथ रोपित किया गया। सक्रिय रासायनिक घटकों अर्थात: सभी फाइटोस्ट्रॉल्स तथा एस्कर्बिक अम्ल की जानकारी के लिए औषधीय तथा सुरभित पादपों के तनों के ताजा नमूने लिये गये। तना नमूनों के सभी फाइटोस्ट्रॉल्स के नमूने जनवरी से मार्च के बीच आकलित किये जो 56.21 मि.ग्रा./100 ग्रा. पाये गये। नवम्बर 2006 से मार्च 2007 तक मासिक वैविध्य का अध्ययन करने के लिए हड़जोर के तना नमूनों में एस्कार्बिक अम्ल का आकलन किया गया। मात्रा जनवरी में अधिकतम (307.38 मि.ग्रा./100 ग्रा. नमूना) पाई गई। मैक्रोएलीमेन्ट्स अर्थात कैल्सियम, मैग्नीशियम, पोटेशियम, फास्फोरस की मात्रा तथा सूक्ष्म मात्रिक तत्व अर्थात (बोरॉन, जिंक, मैंगनीज, सेलेनियम, मौलिब्डेनम, तांबा, वैनाडियम तथा सिलीकान) की मात्रा जानने के लिए ताजे तना नमूने लिये गये। हड़जोर तना नमूनों से जुलाई से मार्च 2007 तक मैक्रोस्लीमेन्ट्स के नमूने मासिक अंतराल पर लिये गये। कैल्सियम (1.12 %) और मैग्नीशियम (1.44 %) की अधिकतम मात्रा मार्च तथा पोटेशियम की अधिकतम मात्रा (0.72 %) नवम्बर में पाई गई।



सीएफआरएचआरडी, छिन्दवाड़ा में रावोल्फिया सर्पेन्टिना (सर्पगंधा) रोपणियां



वर्ष 2006-2007 में पूरी की गई परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : मध्य प्रदेश के उष्णकटिबंधी जलवायु में कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पादपों की उत्पादन तकनीक का मानकीकरण (सी एफ आर एच आर डी छिन्दवाड़ा को 40 % तथा टी एफ आर आई को 60 % कार्य दिया गया है। निधिकरण निकाय : राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड) [055/सी एफ आर एच आर डी-2003/एम एच एफ डब्ल्यू]

उपलब्धियां : सी एफ आर एच आर डी छिन्दवाड़ा की सर्पगंधा रोपणियों से पांच कि.ग्रा. रौवोल्फिया सर्पेन्टियना (सर्पगंधा) के बीज एकत्रित किये गये।

टिनोस्पारा कोर्डीफोलिया (गुडबेल) की कर्तनों को देलखारी और मोरघाट वन रेंजों से एकत्र करके विभिन्न सांद्रणों में आई बी ए का अनुप्रयोग कर मिस्ट चेम्बर में उनके जड़न पर अध्ययन किया गया। आई बी ए – 500 पी पी एम में 100 % जड़न पाया गया।

देलखारी और मोरघाट वन रेंजों से एकत्र करके विभिन्न सांद्रणों में आई बी ए का अनुप्रयोग कर मिस्ट चेम्बर में उनके जड़न पर अध्ययन किया गया। आई बी ए – 500 पी पी एम में 100 % जड़न पाया गया।

गुडबेल के बीजों को पौधशाला में बोया गया और अक्टूबर 2006 में 95 % अंकुरण रिकार्ड किया गया। पश्चिमी छिन्दवाड़ा वन प्रभाग के दिलखारी रेंज से कर्तने एकत्र की गई और जड़न के लिए विभिन्न सांद्रणों वृद्धि नियामक का अनुप्रयोग किया गया किन्तु जड़न नहीं पाया गया।

वर्ष 2006-2007 के दौरान जारी परियोजनायें (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : मध्य प्रदेश के सतपूड़ा पठार में औषधीय पादपों और जड़ियों पर किसानों के खेतों में कृषि वानिकी मॉडलों पर कार्यक्षेत्रीय परीक्षण (निधिकरण निकाय : राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड) [110/सी एफ आर एच आर डी-2006-3/एन एम पी बी) (10) 2006-2009]

उपलब्धियां : विभिन्न औषधीय महत्व के पादपों के 30000 पौधों जैसे एन्ड्रोग्राफिस पेनीकुलाटा, एस्परागस रेसीमोसस, रौवोल्फिया सर्पेन्टियाना, आर. टेट्राफिला, एगल मार्मीलोस, मोरिंगा ऑलीफेरा, विथानिया सोम्नीफेरा, आदि को पौधशाला में उगाया गया और करीब आँवला पौधों के 800 कलमों और 1000 एगल मार्मीलोस पौधों का प्रापण किया गया और उनका उपयोग प्रदर्शन एवं अनुसंधान भूखंडों, कृषि वानिकी भूखंडों में उगाने में किया गया और किसानों में वितरित किया गया।

औषधीय प्रजातियों की रोपण सामग्री को किसान के खेतों में कृषि वानिकी रोपणियों के लिए स्थापित किया गया। एम्ब्लीका ऑफिसिनेलिस और मोरिंगा ऑलीफेरा कृषि वानिकी आधारित रोपणियों को टमाटर और आलू जैसी फसलों के साथ स्थापित किया गया।

एन्ड्रोग्राफिक्स पेनीकुलाटा, एस्परागस रेसीमोसस, रौवोल्फिया सर्पेन्टियाना, आर टेट्राफिला, विथानिया सोम्नीफेरा को स्थापित किया गया और एगल मार्मीलोस, मोरिंगा ऑलीफेरा की छांव तथा साथ ही औषधीय पादपों की वृद्धि पर छाया का प्रभाव जानने के लिए खुले में अनुरक्षित किया गया।

शिक्षा और प्रशिक्षण

केन्द्र ने 2006-2007 के दौरान 10 प्रतिशत कार्यक्रमों का आयोजन और निष्पादन किया। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में 409 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।



सहानुबंधन और सहयोग

अनुसंधान/प्रशिक्षण निष्पादन करने के लिए राज्य वन विभाग, वन विकास निगम और कृषि अनुसंधान केन्द्र, छिन्दवाड़ा तथा वन स्थलों और मृदा सर्वेक्षण के विश्लेषण के लिए भारतीय वन सर्वेक्षण से संबंध विकसित किये गये।

प्रकाशन

डा. पी बी मेश्राम एवं शालिनी भोवते, 2006, "दीमक एवं सफेद गीडार का नियंत्रण" 4101—आई सी एफ आर ई—बी एल/सी एफ एच आर डी बी एल 2006।

सम्मेलन/बैठकें/कार्यशालायें/सेमीनार/संगोष्ठी/प्रदर्शनियां

1. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ तथा श्री एच एस अवस्थी, फॉरेस्टर ने "लघु वन उपज/वनस्पति आधारित पौधों के प्रसंस्करण एवं विपणन" (गौण वन उपजों का प्रक्रमण एवं विपणन) नामक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 13 अप्रैल 2006 को भाग लिया जिसे बर्खेडा, पठानी, भोपाल में आयोजित किया गया था।
2. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ ने 11 जुलाई 2006 को भोपाल (म०प्र०) में "मध्य प्रदेश के पारि-पर्यटन के नये मापदण्ड" में भाग लिया।
3. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ ने "जैव विविधता प्रकृति बचाये, भविष्य संवारे" पर 14वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस कार्यशाला में 2 सितम्बर 2006 को भाग लिया जिसका आयोजन राष्ट्रीय पब्लिक स्कूल छिन्दावाड़ा द्वारा किया गया था।
4. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ ने वन संरक्षक कार्यालय और समवद भवन छिन्दवाड़ा में 1 अक्टूबर 2006 को वन्यजीव रक्षण सप्ताह के उद्घाटन सत्र में भाग लिया और पादप तथा प्राणियों की संकटापन्न प्रजातियों पर व्याख्यान दिया।
5. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ ने "वन्यजीव तथा औषधीय पादप संरक्षण पर राष्ट्रीय रणनीति" पर 10 अक्टूबर 2006 को खिरसादोह पैरासिया में डी एफ ओ पश्चिम द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया और "औषधीय पादपों का महत्व तथा एन एम पी बी की भूमिका" पर व्याख्यान दिया।
6. डॉ. ए विजयराघवन, वैज्ञानिक "बी" तथा डा. विशाखा कुम्भारे, वैज्ञानिक 'बी' ने "प्राकृतिक उत्पाद और जैव विविधता : रसायन शास्त्र एवं उपयोजन" पर 2-3 नवम्बर 2006 को एफ आर आई देहरादून में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "मध्य प्रदेश के छिन्दवाड़ा जिले की वलुई मृदा में कियोकन्ड (कॉस्टस स्पेसियस) के उत्पाद पर पादप घनत्व का प्रभाव" तथा भारतीय जनजातियों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले टूटी हड्डी जोड़ने वाले पादपों का उपयोग" पर पोस्टर प्रस्तुति सत्र में पोस्टर प्रस्तुत किये।
7. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ ने सी एफ आर एच आर डी, छिन्दवाड़ा ने भा.व.से. अधिकारियों के लिए "देश की पारितंत्रीय तथा आर्थिक सुरक्षा में वनों की भूमिका की सक्रियता— वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की रणनीतियां" पर प्रशासन अकादमी, भोपाल 16 और 17 नवम्बर 2006 को दो दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।
8. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ ने एस एफ डी तथा डब्ल्यू डब्ल्यू एफ द्वारा 29 और 30 नवम्बर 2006 को "जैव विविधता संरक्षण तथा वन नियम और उनकी समस्यायें" पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
9. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ ने पी जी कालेज छिन्दवाड़ा में 3 दिसम्बर 2006 को "औषधीय पादपों पर रसायन शास्त्र का महत्व" विषय पर आयोजित सेमीनार में भाग लिया।
10. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ ने पी जी कालेज छिन्दवाड़ा में 4 दिसम्बर 2006 को "औषधीय पादपों का उपयोजन" पर व्याख्यान दिया।
11. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ ने खुटामा, सिलवानी में 11 दिसम्बर 2006 को "लोक वानिकी और सामाजिक वानिकी" पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।



12. डा. विजय राघवन, वैज्ञानिक 'बी' ने "राष्ट्रीय कृषि वानिकी केन्द्र" झांसी, उ०प्र० राज्य में 16 से 18 दिसम्बर 2006 को "कृषि वानिकी और जीविकोपार्जन पर्यावरणीय रक्षण तथा जैव ईंधन उत्पादन" पर राष्ट्रीय सिम्पोजियम में भाग लिया और "गंवारपाठा (अलोई वेरा) की खेती, रोपणियों तथा साल वनों में अन्तः खेती" के बारे में बताया।
13. डॉ. डी एल नन्देश्वर, वैज्ञानिक 'सी', डॉ. ए विजयराघवन, वैज्ञानिक 'बी' तथा श्री एन डी खोब्रगडे, अनुसंधान अधिकारी ने "वन उत्पादकता वृद्धि : आनुवंशीय तथा प्रजनन विकल्प" पर टी एफ आर आई, जबलपुर में 21 से 23 फरवरी 2007 को आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
14. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ सी एफ आर एच आर डी छिन्दावाड़ा ने 26 से 27 फरवरी 2007 को शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा में "राष्ट्रीय शोध सम्मेलन-जनजातीय विकास के नये आयाम" में भाग लिया।
15. श्री सुनीश बख्शी, डीसीएफ ने 27 फरवरी 2007 को होटल अभिमन्यु, छिन्दवाड़ा में "विध्य जड़ीय उत्पाद श्रृंखला-परिचयात्मक बैठक" में भाग लिया।

अवार्ड

श्री आर एस साहू, वैज्ञानिक 'बी' को भारतीय लोक प्रशासन, नई दिल्ली द्वारा 20 नवम्बर 2006 से 25 जनवरी 2007 तक वैज्ञानिकों और तकनीकीविदों के लिए आयोजित (भारत सरकार विज्ञान एवं तकनीकी विभाग द्वारा प्रसारित) छठे फाउण्डेशन प्रशिक्षण में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

1. श्री आर जी सोनी, वन संरक्षक, छिन्दवाड़ा और डॉ. खरे ने 2 मई 2006 को केन्द्र का दौरा किया।
2. श्री आर के चौधरी, मुख्य वन संरक्षक, भोपाल तथा श्री ए आरगल, वन संरक्षक, एन पी कार्पोरेशन भोपाल तथा 50 एस एस बिसेन (से०नि०) वैज्ञानिक ने 16 जून 2006 को संस्थान का दौरा किया।
3. श्री आर जी सोनी, वन संरक्षक छिन्दवाड़ा ने 5 सितम्बर 2006 को केन्द्र का दौरा किया।
4. श्री दिनेश राय, माप्रसे, उपाध्यक्ष दिल्ली विकास प्राधिकरण, नई दिल्ली ने 15 अक्टूबर 2006 को केन्द्र का दौरा किया।
5. श्री आर जी सोनी, वन संरक्षक और श्री एस शिलावत, वन संरक्षक (कार्य योजना) छिन्दवाड़ा ने 28 नवम्बर 2006 को केन्द्र का दौरा किया।
6. श्री आर जी सोनी, वन संरक्षक, छिन्दवाड़ा ने 19 फरवरी 2007 को केन्द्र का दौरा किया।